एक दिवसीय राष्ट्रीय
..... वेब-संगोष्ठी
रिपोर्ट

संस्था का नाम : राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाज़ीपुर (उ.प्र.)

NAAC द्वारा B++ ग्रेड से प्रत्यायित

कार्यक्रम : एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार
दिनांक : 13- 07- 2020
विषय : " लैंगिक असमानता निहित पूर्वाग्रह एवं
महिला अधिकार"
जानिए अपने अधिकार : मांगिए अपना हक

उपविषय :

1.लैंगिक समानता : महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण (चुनौतियां एवं समाधान)
2- लैंगिक भेदभाव एवं महिला हिंसा : रोकथाम हेतु सरकारी कार्यक्रम और पहल ।
3- लैंगिक समानता और पर्यावरण।
4- भारत में लैंगिक भेदभाव एवं पूर्वाग्रह।
5- लैंगिक असमानता के खिलाफ कानून एवं संविधान की भूमिका।
6- लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका।
7- महिला सुरक्षा:जानिए अपने अधिकार मांगिए अपना हक।
8- महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार।
9- महिलाओं के विरुद्ध साइबर क्राइम एवं सम्बन्धित कानूनी अधिकार

माध्यम : zoom cloud meeting एप्लिकेशन के द्वारा।

उद्देश्य:आज जब हम 21वीं सदी के मुहाने पर खड़े होकर वर्तमान समय और समाज का अवलोकन करते हैं तो तमाम अनिश्चितताएं और चुनौतियों के बीच लैंगिक विभेद एवं महिला उत्पीड़न जैसी समस्याओं से भी हमारा सामना होता है सेमिनार का उद्देश्य इस मुद्दे से जुड़ी समस्याओं पर एक सार्थक विमर्श का आयोजन करना है । देश में बालको की अपेक्षा बालिकाओं की संख्या मे गिरावट , लैंगिक असमानता एवं निहित पूर्वाग्रह के कारण ही है। अजन्मे शिशु का लिंग पहचान कर उसे नष्ट करना ,बाल विवाह ,बालिकाओं में कुपोषण की समस्या, शिक्षा , स्वास्थ्य , घरेलू हिंसा ,सामाजिक असुरक्षा, स्त्रियों के प्रति बढ़ती यौन हिंसा आदि बौद्धिक समाज में ये मुद्दे चर्चा -परिचर्चा का विषय रहे हैं और इस दिशा में जागरूकता का क्रम लगातार जारी है। महिलाएं हिंसामुक्त परिवेश में सम्मान पूर्वक जीवन जी सकें इसके लिए उन्हें आर्थिक दृष्टि से सशक्त होने के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना भी नितांत आवश्यक है ।जब तक हम स्वयं जागरूक नहीं होंगे तमाम नियम कानून और अधिकार केवल शोपीस बनकर रह जाएंगे। इन्हीं बातों पर

विस्तार पूर्वक चिंतन और मंथन करना इस वेब-सेमिनार का उद्देश्य है|

:

आमंत्रित वक्ता

1- प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ,कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक(मध्य प्रदेश)

2- प्रो.राज नारायण शुक्ल निदेशक,भाषा संस्थान , लखनऊ

3-प्रो. उमापति दीक्षित ,अध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय हिंदी विभाग,(केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा)

4-प्रो.पुष्पिता अवस्थी ,निदेशक,हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन ,नीदरलैंड

5-प्रो. आशा यादव, वसंत कन्या महाविद्यालय BHU,वाराणसी

6- प्रो.क्षमाशंकर पांडे, से. काशी नरेश पीजी कॉलेज, ज्ञानपुर

7-डा. बी.एन पांडे, राजकीय महिला पीजी कॉलेज गाज़ीपुर

संक्षिप्त रिपोर्ट :

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के पत्रांक संख्या 11- 6- 2020 (GS)दिनांक 25 -06-2020 के आलोक में' महाविद्यालय आदेश पत्रांक 223 /2020 /दिनांक 06-07- 2020 के अनुपालन में दिनांक 13 जुलाई 2020 दिन सोमवार को राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाज़ीपुर (उत्तर प्रदेश) में एक राष्ट्रीय- वेब सेमिनार का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर सविता भारद्वाज के द्वारा किया गया । सेमिनार में आमंत्रित प्रो. उमापति दीक्षित के द्वारा मंगलाचरण एवं व्याख्यान से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि स्त्रियों को लैंगिक समानता दिलाने हेतु उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। एक शिक्षित स्त्री ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूक को हो सकती है और उनकी मांग कर सकती है। अतः स्त्रियों का शिक्षित होना नितांत ही आवश्यक है ।प्रो. राज नारायण शुक्ला अपने विचार व्यक्त करते हुए कहां की वैदिक काल में स्त्रियों स्वतंत्र थी उन्हें अपने तथा अपने परिवार से संबंधित निर्णय लेने का पूरा अधिकार प्राप्त था। साथ ही उन्हें अन्य सामाजिक अधिकार भी मिले हुए थे ।कालांतर में समय परिवर्तित होने के साथ-साथ तमाम कुरीतियां समाज में आती गई ,लैंगिक असमानता एवं पूर्वाग्रह भी उनमें से एक है ।उन्होंने स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया। प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि समाज में स्त्री और पुरुष परस्पर विरोधी या प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि सहयोगी है। उनके प्रयास और सहयोग से ही समाज में वैचारिक समृद्धि और संपन्नता आ सकती है। आपने अपने अनुभव के आधार पर विदेशों में स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला प्रो. आशा यादव ने लैंगिक असमानता निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार पर अपने विचार साझा किए और कहा कि परंपरागत वैचारिक धारणा के कारण ही समाज में पुत्र मोह की अधिकता है ।लोग पुत्री नहीं चाहते पुत्र की कामना करते हैं क्योंकि वह उनकी वंश वृद्धि करेगा और समाज में उनके नाम को बनाए रखेगा। जबकि वास्तव में नाम और वंश जैसी कोई चीज होती ही नहीं है, यह पूर्वाग्रह के कारण ही होता है ।उन्होंने महिलाओं को अपने अधिकारों के विषय में जानने और उसका उपयोग करने पर जोर दिया ।

इसी क्रम में अपनी बात रखते हुए महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के अध्यक्ष डॉ बीएन पांडे ने स्त्रियों की समस्याओं और उनके समाधान पर बात की।

प्रोफेसर क्षमा शंकर पांडे ने संगोष्ठी में महिलाओं के गौरवशाली अतीत एवं समाज में स्त्रियों के प्रति बढती हिंसा पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि स्त्रियों को दोयम दर्जे पर रखकर कोई भी समाज उन्नति को प्राप्त नहीं हो सकता। कहा गया है कि अगर हम एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं ,ऐसी स्थिति में स्त्रियों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान होना चाहिए। साथ ही सरकारी तंत्र की

बदहाली पर भी उन्होंने दुःख व्यक्त किया और स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति को आवश्यक बताया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन करते हुए डॉ शशि कला जायसवाल ने महिलाओं को संविधान में प्रदत्त उनके अधिकारों की चर्चा की। कहा कि महिलाओं का जागरूक होना नितांत ही आवश्यक है, विशेषकर जनजातीय इलाकों एवं भारत के दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाली स्त्रियों को इस बारे में जागरूक करने की अधिक आवश्यकता है ।तभी हमें स्त्रियों का संपूर्ण प्रतिनिधित्व प्राप्त हो पाएगा । कार्यक्रम की संयोजिका पूजा सिंह ने कहा कि महिलाओं के अधिकारों को लेकर समाज की मानसिकता बदलने की जरूरत है । शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे मानसिकता में बदलाव लाया जा सकता है।

शोध पत्र वाचन सत्र में 7 प्रतिभागियों ने शोध पत्र का वाचन किया ,जिसमें निकिता ,रजत पांडे ,अर्चित पांडे यशोदा बिष्ट ,अहमद अली आदि शामिल थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रो. सविता भारद्वाज ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अतीत से वर्तमान तक स्त्रियों की स्थिति उनमें निरंतर होने वाले परिवर्तन ,महिला उत्पीड़न एवं वर्तमान समस्याओं पर विशेष रूप से अपनी बात रखी।

भूगोल विभाग के अध्यक्ष संतन कुमार राम ने इस पूरे कार्यक्रम को तकनीकी सहयोग प्रदान किया तथा दृश्य एवं श्रव्य की निरंतरता बनाए रखने में अपनी महती भूमिका निभाई ।उन्होंने कार्यक्रम के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन कर सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का सफल आयोजन पूजा सिंह एवं डॉ शशि कला जायसवाल के नेतृत्व मे किया गया।

उपलब्धि :

इस वेब संगोष्ठी में जहां वक्ताओं के रूप में विद्वान अतिथि मौजूद रहे। भारत के विभिन्न राज्यों, छत्तीसगढ़ राजस्थान पंजाब उत्तर प्रदेश हरियाणा बिहार मुंबई महाराष्ट्र लखनऊ सहित कुल 19 राज्यों से प्रतिभागियों ने प्रभागिता की ।

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के आचार्यों , शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने इस वेबीनार में भाग लिया। हमें कुल 435 पंजीकरण इस संगोष्ठी के लिए प्राप्त हुए।

मीडिया कवरेज एवं फोटोः

हलचल

राजकीय महिला पीजी कालेज में आयोजित एक दिवसीय ई-सेमिनार।

प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि सहयोगी होते हैं स्त्री-पुरुष

गाजीपुर। राजकीय महिला पीजी कॉलेज की ओर से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में लैंगिक समानता, निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार विषय पर एक संगोष्ठी हुई। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक के कुलपति प्रो. प्रकाश मणि त्रिपाठी ने लैंगिक समानता के लिये को शिक्षित किए जाने पर बल दिया। वसंत कन्या महाविद्यालय की हिंदी विभाग की आचार्य डा. आशा यादव ने लैंगिक असमानता, निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार पर अपने विचार व्यक्त किए। वेबीनार में 400 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया तथा 30 से अधिक शोध पत्र प्राप्त हुए। इसमें प्रोफेसर क्षमा शंकर पांडेय, संयोजक डा. पूजा सिंह, डा. संतन कुमार राम, मनीष कश्यप, डा. शिवकुमार, डा. सत्येंद्र सिंह, डा. निरंजन, मुहम्मद अखलाक खान, डा. सारिका सिंह रहे।

महिलाएं तिभिन्न विषयो पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट अभिव्यक्त कर रही हैं:प्रकाश मणि

मीरजापुर। इंदिरा गांधी नेशनल ट्राईबल विश्वविद्यालय अमरकंटक (मध्य प्रदेश) के कुलपति प्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा है कि समय बदल रहा है स्त्री अधिकार के प्रति सजग है। वे विभिन्न विषयों पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट अभिव्यक्त कर रही हैं। कहा कि महिलाएं चुनौतियों को अपने वैचारिक आत्मबल के बल पर दूर करने की जय घोष करने लगी है। उन्होंने यह विचार लैंगिक असमानता निहित पू-र्वाग्रह एवं महिला अधिकार विषयक राष्ट्रीय बेबीनार में सोमवार को कहीं। उन्होंने वेबीनार कार्यक्रम में कहा कि सामाजिक क्रांति महिलाओं की स्थिति में सुधार के बाद ही विकास का आधार बनेगा। विशिष्ट वक्ता नीदरलैंड हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन की प्रोफेसर पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि महिलाएं अपने अधिकार कार्य विकास के लिए सूचना को उपयोगी मान रही है। समय के हिसाब से वे शिक्षा के प्रति जागरूक होकर कदम दर कदम समाज के विकास से अपने को जोड़ने में लगी हुई है।

इसमें उनके स्व का निर्णय महत्वपूर्ण बना हुआ है। वसंत कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्रोफेसर आशा यादव ने कहा कि सामाजिक विषमता मिटाने में शिक्षा की मूल आवश्यकता है जिसके लिए गुणवत्ता युक्त शिक्षा लड़कियों के लिए जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रोफेसर कुमार दीक्षित ने कहा कि समाज को विकसित और स्वस्थ बनाने में नारी समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव अपराध के समान है।

कार्यक्रम के संरक्षक डॉक्टर सरिता भारद्वाज ने कहा कि स्त्री को स्त्री करती है वही उसकी मार्गदर्शक है। के साथ भेदभाव अपराध है वह पुरुष जिसे औरत के दूध से पुरुष बनाती है वर्षों के पूर्वाग्रह उसका नजरिया बदल देता है इसलिए लड़कियां शिक्षित होकर नए समाज का निर्माण साहस और बुद्धि से करें। श्रीमती इंदिरा गांधी राजकीय पीजी कालेज लालगंज के पूर्व सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉक्टर क्षमाशंकर पांडे ने कहा कि स्त्री के अधिकारों के संघर्ष का रास्ता उसे दोयम दर्जे नागरिक बनाने वाले लोगों को संघर्ष के रास्ते से अलग होना पड़ेगा। कहा कि उसे अपने गुणों और योग्यताओं का इस तरह विकास करना होगा कि वह व्यवस्था के लिए अनिवार्य बनाने जाए। विषय का प्रवर्तन बीएन पांडे ने किया। श्याम मोहन उपाध्याय ने कहा शिवशक्ति की अवधारणा पर भेदभाव दरक पैदा करता है। कार्यक्रम की संयोजक और संचालक प्रोफेसर पूजा सिंह और शशिकला जायसवाल ने कहा कि सोच और दृष्टिकोण दोनों में बदलाव लाने की जरूरत है।

जिससे भारतीय नारी समाज अपने अधिकार का संवैधानिक सुव्यवस्थित लाभ लेते हुए भाग्य निर्माता बने। इसमें नंदकिशोर शर्मा, प्रमोद कुमार, पुष्पा यादव, अनूप शुक्ला, डॉक्टर अनुपमा, सरोज सिंह, विजय सिंह, निहाल चौरसिया, विजयश्री समेत सैकड़ों लोगों ने प्रतिभाग किया।

लैंगिक असमानता और निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार पर बेविनार का आयोजन

[illegible]

[illegible]

महिलाओंको शिक्षित करनेपर बल

लैंगिक समानता, निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार विषयक संगोष्ठी

गाजीपुर। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में लैंगिक समानता, निहित पूर्वाग्रह एवं महिला अधिकार विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी। गोष्ठी का विषय प्रवर्तन वरुणमति विभाग के डा. बीएन पाण्डेय ने किया। मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक, मध्यप्रदेश के कुलपति प्रो. डा. प्रकाशमणी त्रिपाठी ने लैंगिग समानता हेतु स्त्रियों को शिक्षित किये जाने पर बल दिया। हिन्दी संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रो. राजनारायण शुक्ल ने वैदिक सभ्यता में स्त्रियों के अधिकारों का विस्तार से उल्लेख किया। प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि स्त्री-पुरुष आपस में प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि सहयोगी हैं। अन्य वक्ताओं ने अपने विचारों के माध्यम से वेबिनार को समृद्ध किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य सविता भारद्वाज ने अतीत से वर्तमान तक स्त्रियों के प्रति भेदभाव लैंगिग असमानता, स्त्री शिक्षा आदि मुद्दो पर अपना विचार रखा। गोष्ठी का शुभारम्भ केन्द्रीय संस्थान आगरा के हिन्दी विभागाध्यक्ष पं. उमापति दीक्षित के मंगलाचरण से हुआ। संगोष्ठी में बसंत कन्या महाविद्यालय वाराणसी की हिन्दी विभाग की वरिष्ठ आचार्य डा. आशा यादव, राजकीय पीजी कालेज ज्ञानपुर के सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रो. श्यामशंकर पाण्डेय, डा. संतन कुमार राय, डा. सत्येन्द्र सिंह, डा. निरंजन कुमार यादव, मु. अखलाक खान, डा. सारिका सिंह आदि ने भी अपना विचार व्यक्त किया। मोडिया प्रभारी डा. शिव कुमार ने बताया कि इस वेबिनार में ४०० से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया तथा ३० से अधिक शोध पत्र प्राप्त हुआ। संचालन संयोजक पूजा सिंह एवं डा. शशिकला जायसवाल ने किया।

उतराकरेंट, ाकी मौत

लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। थानाध्यक्ष शशिचंद्र चौधरी ने बताया कि मृतक परिजनों के

बोरेमें शवकी आशंकासे हड़कंप

सैदपुर (गाजीपुर)। वाराणसी-गाजीपुर राष्ट्रीय मार्ग २९ पर स्थानीय थाना क्षेत्र के भितरी मोड़ से आगे सोमवार की प्रातः मुह बंधे बोरा से दुर्गंध आने से उसमें शव की आशंका से हड़कंप मच गया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर बोरा खुलवाया तो मरा हुआ जानवर मिला। जानकारी के अनुसार भितरी मोड़ के आगे कोल्ड स्टोरेज के पास एक मुंह बंधा बोरा देखा उसमें शव की आशंका से हड़कंप मच गया। सूचना पर कोतवाली प्रभारी रविन्द भूषण मौर्य पहुंचे और बोरा खुलवाया तो उसमें मरा हुआ सुअर निकला। पुलिस ने उसे अन्यत्र फेंकवा दिया।

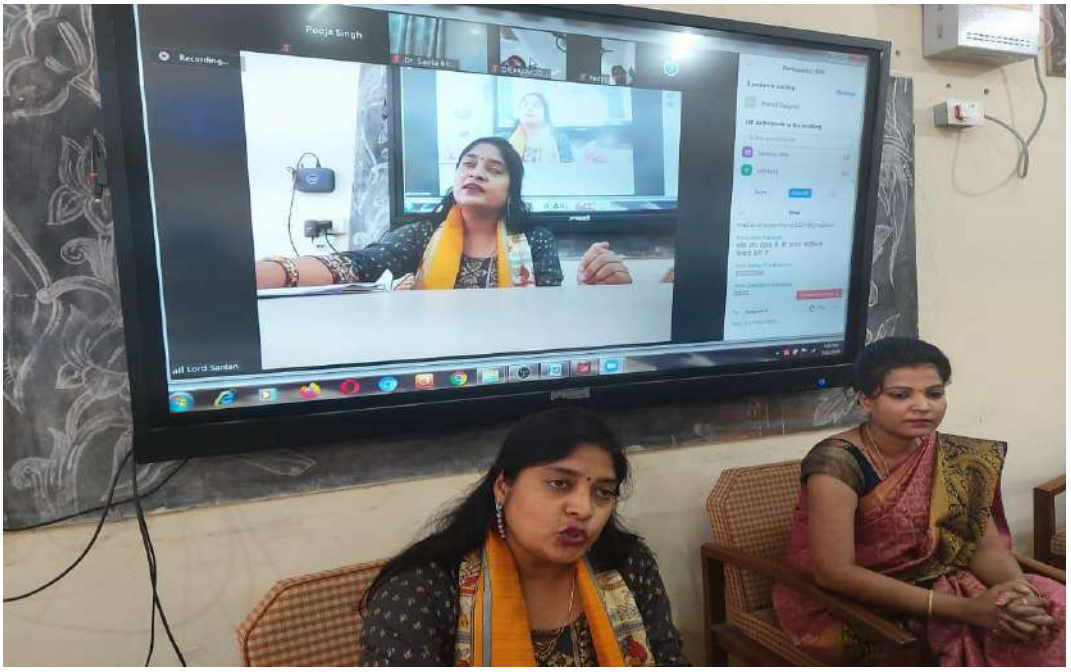

प्रो. सविता भारद्वाज
प्राचार्य

जायसवाल

संयोजक
डॉ.शशि कला

(हिंदी विभाग)
पूजा सिंह
(शिक्षाशास्त्र विभाग